# भारत–अमेरिका आर्थिक सम्बन्ध

*डॉ. ममता शर्मा

**सारांश**

समय के साथ भारत–अमेरिका सम्बन्ध निरन्तर प्रगाढ़ हो रहे है। भारत–अमेरिका के बीच आर्थिक, व्यापारिक, राजनीतिक, सामरिक बहुआयामी सम्बन्ध हैं लेकिन 'आर्थिक सम्बन्ध' इन सभी का आधार स्तम्भ है। 1991 के आर्थिक सुधार व उदारीकरण के फलस्वरूप भारत–अमेरिका आर्थिक सुदृढ़ता को समय–समय पर बदलती रही सभी सरकारों ने निरन्तर जारी रखा।

**मुख्य शब्दः** भारत, अमेरिका, सम्बन्ध, आर्थिक, व्यापार।

**प्रस्तावना**

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात के शुरूआती दौर में भारत–अमेरिका आर्थिक सम्बन्ध काफी निराशाजनक रहे। 1960 के दशक के अन्तिम वर्षों में दोनों देशों के आर्थिक सम्बन्धों में आर्थिक सहायता क्षेत्र की प्रमुख भूमिका रही। अमेरिका ने भारत को आर्थिक सहायता देना शुरू किया और भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना की सफलता की कामना की। उसने प्रथम प्राविधिक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किये। एक वर्ष बाद एक विशेष अधिनियम के अर्न्तगत 189.7 मिलियन अमेरिकी डॉलर की राशि के मूल्य का ऋण अमेरिका द्वारा भारत को दिया गया। धीरे–धीरे सहायता में विस्तार होने लगा। सन् 1960 में चार वर्ष की अवधि के लिए पी. एल. 480 नामक एक समझौता हुआ, जिसके अर्न्तगत अमेरिका ने भारत को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न भेजने का आश्वासन दिया। भारत को आर्थिक सहायता के साथ–साथ सैन्य सहायता प्रदान की गई। यह सैन्य सहायता राशि लगभग 80 मिलियन डॉलर के करीब थी।

भारत को द्विपक्षीय सहायता देने वालों मे अकेला अमेरिका सबसे बड़ा सहायता दाता रहा। अप्रैल 1971 तक भारत को दी जाने वाली कुल विदेशी सहायता राशि की आधी राशि अकेले अमेरिका ने दी। यह राशि 9,896.3 मिलियन डॉलर थी। इसमें ऋण व अनुदान सम्मिलित थे।

**आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत–अमेरिका आर्थिक सम्बन्ध**

1991 में आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने सरकारी नियंत्रण में कमी, नियमों में छूट, बाजार में खुलेपन, भूमण्डलीकरण पर जोर दिया। सहायता राशि में भी वृद्धि हुई। भारत के आर्थिक उदारीकरण के कार्यक्रम ने अमेरिका को अधिक आकर्षित किया। इस आर्थिक सुधार प्रक्रिया का भारत–अमेरिका व्यापार व निवेश पर गहरा प्रभाव पड़ा। 1990 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 100 अमेरिकी मिलियन डॉलर था 1996 में बढ़कर 2.4 अमेरिकी बिलियन डॉलर हो गया। अमेरिका की एक–तिहाई कम्पनियाँ भारत में निवेश करने आई। अमेरिका भारत को एक उभरते हुए बाजार के रूप में देखने लगा। 1991–94 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 2039 मिलियन डॉलर था।

### भारत–अमेरिका व्यापार (1998–2003)

सन् 1998 में भारत के लिए अमेरिका के कुल निर्यात 3.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। अमेरिका का भारत से कुल आयात 8.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। इसी प्रकार 1999 में अमेरिका से कुल निर्यात 3.7 बिलियन डॉलर का था तथा भारत से आयात 9.08 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

सन् 2000 व 2001 में यह बढ़ाकर 10.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर व 9.7 बिलियन डॉलर हो गया तथा अमेरिकी निर्यात 3.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर तथा 3.7 बिलियन डॉलर हो गया। सन् 2002 में भारत को अमेरिकी कुल निर्याता 4.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया और कुल आयात 11.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। भारत अमेरिकी निर्यात के लिए 27वां सबसे बड़ा बाजार तथा 19वां सबसे बड़ा आयातक था। 1998–2002 के बीच अमेरिकी निर्यात बढ़कर 16 प्रतिशत हो गया। जबकि अमेरिकी आयात भारत से 44 प्रतिशत की वृद्धि हुई। दोनों के बीच उपयोगी वस्तुओं के व्यापार में मशीन, कम्प्यूटर, ट्रांसपोर्ट सामान, सूती वस्त्र आदि (देखिए सारणी–1 में)

**सारणी – 1**

**भारत–अमेरिका के बीच वस्तुओं का व्यापार (1998–2003)**

**(मिलियन अमेरिकी डॉलर)**

| मुख्य उत्पाद | 1998 | 1999 | 2000 | 2001 | 2002 | 2003 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल अमेरिका | 3445 | 3707 | 3663 | 3764 | 4038 | 4986 |
| ऑफिस मशीन–कम्प्यूटर आदि | 175 | 218 | 367 | 349 | 371 | 365 |
| ट्रांसपोर्ट सामान / एयरक्रापट | 454 | 424 | 312 | 394 | 331 | 345 |
| इलैक्ट्रॉनिक मशीन औजार उपकरण और भाग | 214 | 213 | 264 | 311 | 306 | 344 |
| कुल अमेरिकी | 8,225 | 9083 | 10,686 | 9,738 | 11,818 | 13,053 |
| अधातुक वस्तुएं | 2,062 | 2,409 | 2,768 | 2,180 | 2,931 | 2,962 |
| पोशाक व कपड़ा सामान | 1642 | 1646 | 2002 | 1934 | 2064 | 2156 |
| सूतीतन्तु व सामान आदि | 893 | 988 | 1119 | 1050 | 1260 | 1424 |

**स्रोत–अमेरिका वाणिज्य विभाग**

सन् 2003 में अमेरिकी निर्यात बढ़कर 5.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर तथा अमेरिकी आयात 13.1 बिलियन डॉलर हो

गया। भारत अमेरिकी निर्यात के लिए 24वां बाजार था तथा 18वां सबसे बड़ा आयातक था। अमेरिकन निर्यातक वस्तुओं में, ऑफिस मशीन, कम्प्यूटर, रसायन सामान व उत्पाद, इलैक्ट्रिक मशीनरी एयरक्राफ्ट आदि थे एवं आयातक वस्तुओं में अधातु निर्माण सामग्री (हीरा, कीमती पत्थर) वस्त्र, ज्वैलरी, कपड़ा, पोशाक व अनेक प्रकार के फुटकर उत्पाद थे, भारतीय सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अमेरिका भारत का दूसरा सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का स्रोत है। इसके अनुसार 1991 से जुलाई 2001 तक कुल विदेशी निवेश का 16 प्रतिशत निवेश अमेरिका से था। अमेरिका की वाणिज्य विभाग के अनुसार, अमेरिकी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत में सन् 2002 में 3.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। यह सन् 2001 से 900 मिलियन डॉलर की वृद्धि थी।

**भारत–अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार (2004–2010)**

भारत–अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार (2004–2010) को सारणी–2 में दर्शाया गया है।

**सारणी–2**

**भारत–अमेरिका द्विपक्षीय कुल व्यापार**

**(अमेरिकी मिलियन डॉलर में)**

| वर्ष | अमेरिकी आयात भारत से | अमेरिकी निर्यात भारत को | कुल व्यापार | व्यापार संतुलन | प्रतिवर्ष वृद्धि दर (प्रतिशत) |
|---|---|---|---|---|---|
| 2004 | 15572 | 6109 | 21681 | –9462.7 | 16.81 |
| 2005 | 18804 | 7919 | 26723 | –10849.5 | 18.86 |
| 2006 | 21831 | 9674 | 31505 | –11774.6 | 15.30 |
| 2007 | 24073 | 14969 | 39042 | –6341.1 | 19.30 |
| 2008 | 25704 | 17682 | 43336 | –7095.4 | –19.90 |
| 2009 | 21116 | 16441 | 37609 | –4713.7 | –15.22 |
| 2010 | 29531 | 19222 | 48753 | –10308.4 | 22.85 |

**स्रोत–अमेरिकी सेन्सस ब्यूरो, विदेश व्यापार डिवीजन वांशिगटन डीसी (2010)**

सन् 2004 में अमेरिकी निर्यात 6109 मिलियन अमेरिकी डॉलर था जो 2005 में बढ़कर 7919 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया यानि इसमें 22.85 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2006 में अमेरिकी निर्यात बढ़कर 9674 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया तथा 26.31 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2007 में अमेरिकी निर्यात बढ़कर 14969 मिलियन डॉलर हो गया तथा 2006 से 75.04 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2008 में अमेरिकी निर्यात 17682 मिलियन हो गया। इसमें पिछले वर्ष

से 15.34 प्रतिशत की वृद्धि थी। 2009 में अमेरिकी निर्यात 16,444 मिलियन डॉलर था जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 7.52 प्रतिशत की कमी आई। इसका कारण वैश्विक मंदी का दौर था। 2010 में अमेरिकी आयात 19,222 मिलियन डॉलर था जो पिछले वर्ष से 27.78 प्रतिशत अधिक था। भारत अमेरिका के लिए 17 वां सबसे बड़ा वस्तु निर्यातक बाजार है तथा 14 वां सबसे बड़ा आयातक है अमेरिका के लिए। परमाणु समझौते के बाद अमेरिका भारत को एक बड़े बाजार के रूप में देख रहा है।

वर्तमान में सबसे ज्यादा व्यापार भारत का अमेरिका के साथ ही हो रहा है। अमेरिकी वाणिज्य विभाग के नवीनतम आंकडों के अनुसार 2004 में कुल द्विपक्षीय व्यापार 21,681 मिलियन डॉलर था, 2005 में अमेरिका–भारत कुल व्यापार 26,723 मिलियन डॉलर था, 2006 मे 31,505 मिलियन डॉलर हो गया। 2007 में यह बढ़कर 39,042 मिलियन डॉलर हो गया, 2008 में कुल व्यापार 43,336 मिलियन डॉलर था, 2009 में द्विपक्षीय व्यापार 37,609 मिलियन डॉलर था। 2010 में भारत–अमेरिका कुल द्विपक्षीय व्यापार 48,753 मिलियन डॉलर पर पहुँच गया जो साल दर साल नई ऊँचाइयों को छू रहा हैं।

### भारत–अमेरिका आर्थिक व व्यावसायिक सम्बन्धः 2004 से वर्तमान तक

भारत–अमेरिका के बीच आर्थिक, व्यापारिक, राजनीतिक, सामरिक बहुआयामी सम्बन्ध हैं लेकिन 'आर्थिक सम्बन्ध' इन सभी का आधार स्तम्भ है। 1991 के आर्थिक सुधार व उदारीकरण के फलस्वरूप भारत–अमेरिका आर्थिक सुदृढ़ता को समय–समय पर बदलती रही सभी सरकारों ने निरन्तर जारी रखा।

सन् 2002 में अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा के बाद भारत–अमेरिकी द्विपक्षीय सम्बन्धों में और तेजी आई। भारत ने भी बदलती हुई वैश्विक परिस्थितियों के अनुकूल अपने आपको ढाल लिया। आज अमेरिका भारत का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेशक है। 1991–2004 के आकड़े देखें तो यह 11.3 मिलियन डॉलर से बढ़कर 344.4 मिलियन डॉलर हो गया है। वर्तमान में अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। इसी उपलक्ष्य में जुलाई 2005 में ''अमेरिका–भारत व्यापार नीति फोरम'' का निर्माण किया जिसका उद्देश्य– द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि करना तथा बहुराष्ट्रीय व्यापार मसलों पर विचार–विमर्श करना था।

### आर्थिक अन्तः निर्भरता के बिंदु

1. उच्च तकनीकी स्थानान्तरण।
2. आर्थिक साझेदारी समझौता द्वारा 2018 तक 320 बिलियन अमेरिकी डॉलर के व्यापार लक्ष्य को प्राप्त करना।
3. सेवा व्यापार में उच्च लक्ष्य हासिल करना, क्षेत्रों को व्यापार के लिए खोलना।
4. आपसी निवेश को बढ़ावा देना।
5. परमाणु उर्जा से प्राप्त शक्ति को बढाना, नये उत्पादों का विकास करना।
6. आर्थिक क्षेत्र में जानकारी आदान–प्रदान करना।
7. जैव प्रौद्योगिकी, सूक्ष्म प्रौद्योगिकी तथा शैक्षिक क्षेत्र में सहयोग को बढ़ाना।
8. वैज्ञानिक अनुसंधान, स्वास्थ्य सेवा से सम्बन्धित तकनीक का विकास करना।

दोनों देशों को इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यापार व निवेश के क्षेत्र में प्रतिबंधों को समाप्त करने की आवश्यकता है तथा इसके साथ ही भारत को उच्च आर्थिक प्राथमिकता देनी होगी।

इस सहयोग को बढ़ाने के लिए विभिन्न आर्थिक मंचों की स्थापना की गई है। अमेरिकी व्यापारिक ऑकडे के अनुसार भारत में अमेरिकी निर्यात 2009 में, 16.46 बिलियन डॉलर हो गया भारत से आयात 37.64 बिलियन डॉलर हो गया। भारत 14वां सबसे बड़ा व्यावसायिक साझेदार हैं। भविष्य में अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए दो देशों को आपसी मतभेदों को भुलाकर आर्थिक क्षेत्र में ध्यान देने की ज्यादा जरूरत है।

## निष्कर्ष

इक्कीसवीं सदी में गुजरते समय के साथ भारत–अमेरिका सम्बन्ध निरन्तर प्रगाढ़ हो रहे है। वर्तमान समय में भारत–अमेरिका आर्थिक सम्बन्ध अर्न्तक्रिया के दौर में है। दोनों ने एक–दूसरे के लिए नये अवसर व सम्भावनाओं को जन्म दिया। अमेरिका को औद्योगिक उत्पादन के लिए बाजार की आवश्यकता है तथा भारत को प्रौद्योगिकी व तेजी से विकास व वैश्विक समन्वय की आवश्यकता है। इसलिए पारस्परिक लाभ के लिए दोनों देश एक–दूसरे के नजदीक आ रहे हैं।

***व्याख्याता**
**राजनीति विज्ञान विभाग**
**राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़ (राज.)**

## सन्दर्भ सूची

1. नार्मन डी. पामर – 'इण्डिया ऐज ए फैक्टर इन यू.एस. फॉरेन पॉलिसी' – इन्टरनेशनल स्टडीज, नई दिल्ली, जुलाई, 1964, जि. 6, सं.1, पृ.59.
2. ए. अप्पादुरई एण्ड एम.एस. राजन – ''इंडियाज फॉरेन पॉलिसी एण्ड रिलेशन्स'', साउथ एशियन पब्लिशर्स, न्यू दिल्ली, 1988, पृ.215.
3. डेनिस कुक्स – इंडिया एण्ड दी यूनाइटेड स्टेट्सः ऐस्ट्रेन्जड डेमोक्रेसीज,1947–1991, वाशिंगटन डी.सी., 1992, टि. 9, पृ.791.
4. एम.एस. राजन – इण्डिया एण्ड दी इण्टरनेशनल अफेयर्स, लांसर बुक पब्शिर्स, नई दिल्ली, 1998, पृ.195.
5. श्रीवास्तव, वी.के., इश्यूज इन इण्डों–अमेरिकन रिलेशन्स, इन दी रूटीज, नई दिल्ली, 1994.
6. सी.आर.एस. रिपोर्ट, 31 अगस्त 2007, आरएल 34161 इण्डिया–यू.एस इकॉनोमिक एण्ड ट्रेड रिलेशन्स, www.crs.org
7. http:// www.economy watch.com/foreign directory investment. India-us relation
8. सी.आर.एस. रिपोर्ट, आरएस 21502, इण्डिया–यू0एस इकॉनोमिक रिलेशन्स, फरवरी 2004.